Vol 6 Issue 11 May 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | MAY - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

आनन्दरामायण रूप गुणाधारित भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण

डॉ. पुष्पा देवी[1] , डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा[2]
[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, सरस्वती महाविद्यालय, इटावा, उ.प्र.
[2]असोसिएट प्रोफे. एवं अध्यक्ष–इतिहास विभाग, कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा उ.प्र.

सारांश :–
आनन्द रामायण में यह बताया गया है कि किसी कामनाकी पूर्ति के लिए किसी की उपासना करनी चाहिये। ब्रम्हतेज के लिए ब्राम्हणपति इन्द्रियों को किसी भी कामना की पूर्ति के लिये इंद्र संतान की कामना के लिये प्रजापति श्री वृद्धि के लिए देवी माया (दुर्गा) तेजी वृद्धि के लिये सूर्य, धन वृद्धि के लिए आधो वसुओं, पराक्रम के लिए, अन्य के लिये अदिति, स्वर्ग की कामना के लिये देवताओं, राज्य इच्छा के लिये इला प्रतिष्ठा के लिये लोकमान्य अधिपत्य के लिये गंधर्वों स्त्री की कामना के लिये यज्ञ कोष के लिये वरूण विद्या के लिये शिव दाम्पत्य सुध के लिये पार्वती धर्म के लिये विष्णु वंश विस्तार के लिये पितरों आत्मरनक्षा के लिये पुण्यजनों तेजोवृद्धि के लिये मरूदगणों राज्य के लिये चौदह मनुओं अविचार की क्रिया के लिये राछय मनोदंड मिलवित कामपूर्ति के लिये चंद्रमा निष्काम होने के लिये परमेश्वर मोक्ष के लिये भगवान रामचन्द्र की उपासना करनी चाहिये। (आनन्दरामायण रामायण मनोहरकांड सर्ग 9 श्लोक 160 से 169)
यहां यह बताया गया है कि राम के समान न तोई देवता हुआ है न होगा।
रामेण सदृश्यों देवों न भूतो न भविष्यति तसमा प्रियनेन रामचंद्रम प्रज्यूते (आनन्दरामायण रामायण मनोहरकांड सर्ग 9 श्लोक 170)

प्रस्तावना

प्रतीक भारतीय संहिता में विशेष महत्व रखता है। यह वैदिक साहित्य से लेकर अद्यतनीय साहित्य तक अभिव्याप्त है। प्रतीकों की अपनी भाषा होती है वे बोलते हैं (हमारे सांस्कृतिक प्रतीक पृष्ठ 5)
डॉ. ऊषापुरी विद्यावाचस्पति के अनुसार भावों की अभिव्यक्ति के लिये भाषा बहुत सशक्त माध्यम है। ज्यों ज्यों भावों की गहराई आती जाती है। भाषा की तरह तरह की भावमयी तरह तरह की भाषाएं स्वर का उतार चढ़ाव उसकी कमी बहुत सीमा तक पूरा कर देता है। किन्तु लिखित रूप में इन सबकी गुंजाइश नहीं रहती है। अतः सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिये स्थूल प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है। प्रतीक योजना मनुष्य की इन्द्रियों के भोग विषयों में सिमटी रहती है। (आर0मिथक कोष, भूमिक पृष्ठ 43)
मनुष्य के लिये सब समय पूरी बात कहना या लिखना शक्य नहीं होता है जिन्हें दूसरे देखकर समझ सकें। बहुत समय और स्थल ऐसे होते हैं जहां अपने और दूसरों के लिये पहचानने का चिन्ह निश्चित करना पड़ता है।

(क) रूप आधारित भगवाननाम–

यह संसार नाम रूपात्मक है जैसा कि संस्कृत जगत के प्रख्यात आभाजक नाम रूपात्मकवतम जगत से सिद्ध है। अतः इस जगत में नाम और रूप का नाम अन्यानास्तिरक नाम, रूप लीला और धाम इस चतुष्दयी में नाम और रूप पले कहे गये हैं, नाम रूप द्वि ईश उपाधि (श0च0मानसबाल0) में गोस्वामी तुलसीदास ने भी नाम और रूप को ईश्वर की दो उपाधियों कहा है। इससे यह सिद्ध है कि नाम का सर्वाधिक तत्पश्चात रूप का भी महत्व होता है। कहा भी गया है कि –

यादृष वर्तते रूपम तादृषं लमते फलम

तत्वापारिजात 5/25 अतएव इस प्रकारण में रूप आधारित भगवान नामों का तात्वक निरूपण प्रस्तुत है। रूप का शरीर का कलापक्ष कह सकते है। रूप की पूरकता में अंग वस्त्र तथा अलंकारों (आभूषणों) का स्थान होने से सर्वाधिक महत्व होता है। अतः

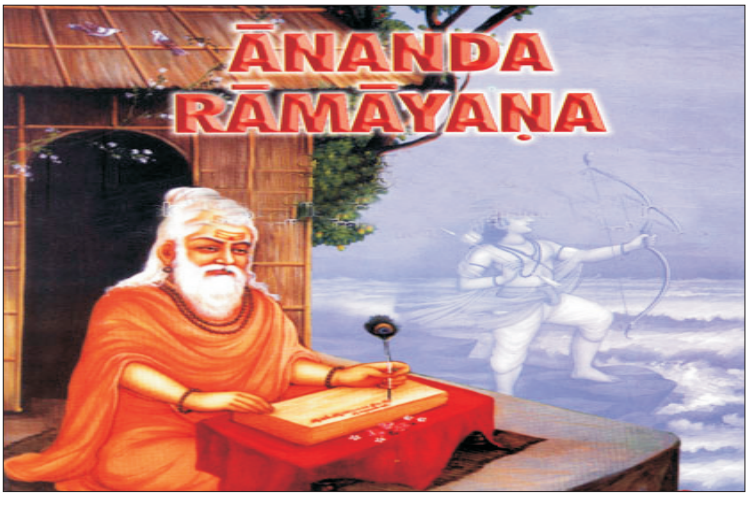

सर्वाधिक भगवान नामों को अंग वर्णनात्मक वस्त्र सज्जा पर तथा अलंकरण सम्बन्धी तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1.अंग वर्णनात्मक

वायु, विद्या वाणी वैभव तथा वस्त्र इन पांच से वयु (शरीर) की प्रथम स्थानीयता प्रमाणित है। शरीर अवयव (अंग) प्रधान होता है। शरीर के प्रमुख अंग नेत्र, मुख, नाक, भौह, कान, होंठ, कपोल, कंठ, वक्ष, नाभि तथा पैर होते है। अतः कवियों तथा मनीषियों ने किसी भी रूप वर्णन में इन (पूर्वोक्त) अंगों की चारूता का ही निरूपण किया है। प्रायः कवियों ने रचनाओं में भगवान की रूप माधुरी का वर्णन किया है में इन्हीं अंगों से सम्बन्धित जो हरिनामा गली प्रस्तुत की है उसमें से कतिपय नामों का तत्वात्मक विवेचन यहां प्रस्तुत है।

रूप का संसार में सर्वोपरि महत्व है। रूप के आधार पर ही संसार में नाम रखा जाता है तथा नाम रूप के अनुसार ही संसार का व्यवहार होता है। तर्क संग्रह (पृष्ठ संख्या 4) में 24 गुण बतलाये गये है जिनमें रूप पहला गुण है जोकि नेत्र के द्वारा ग्रहण किया जाता है।

''चक्षुमत्रिग्राह्यो गुणोरूपम।''

अतएव कवियों ने रूप की अतिरायता था अलौकिकता प्रदर्शित करने के लिये नेत्रों की तुलना विभिन्न उपमानों से की है जहॉ पर नेत्रों की पक्षपातहीनता, निर्लिप्तता या अनासक्ति प्रदर्शित करना अपेक्षित होता है, वहॉ कवि गठा कमल से नेत्रों को उपमित करते है। आनन्दरामायण में इसी भाव की पुष्टि अम्बु जाक्षः सा0 का0 9/24 अम्बुजेक्षण वि0का0 5/18 अम्बुरूहेक्षणः सा0का0 7/10 अरविन्दनयनः वि0का0 6/21 अरविन्दक्षः वि0का0 9/19 अरविन्दनेत्रः सा0का0 4/14 अम्बुजलोचनः वि0का0 3/18 कामलोचनः वि0का0 5/17 नव कंजलोचन वि0का0 2/21 कमल पत्राक्षः रा0का0 3/13 नलिनायतेक्षणः वि0का0 4/24 नव कंजारूपेक्षणः वि0का0 4/14 पुष्करलोचन वि0का0 2/21 पंकजनेत्रः रार0का0 22/21 पुण्डरीकाक्षाः वि0का0 1/16 पुष्कराक्षः सा0का0 4/17 पुण्डरीकामिरामाक्षः वि0का0 3/24 पदमपलाशलोचनः वि0का0 6/16 पदमाक्षः सा0का0 2/23 पदमगर्भारूपेदणः रा0का0 24/21 आदि एकभावमूलक अनेक शब्दों (भगवन्नामों) में हुई है।

''शोभते मानवो लोके अलंकारैरलंकृतः।
अलंकारचस्दिका 1/38

अलंकारणात्मक सर्वाधिक भगवन्नामों के तात्विक विवेचन के प्रस्तुत प्रकरण में यह कहना असंगत न होगा कि किरीट कुण्डल वनमाला कौस्तुभमणि, कांची, केयर आदि जड़ पदार्थ लीक निराम हीं नहीं अपितु लोकोत्तर सुन्दर परब्रम्ह प्रभु श्रीराम के अचित्यसुन्दर श्रीविग्रह में क्या श्री वृद्धि करेंगे। प्ररूतुत श्रीविग्रह में स्थान पाकर वे स्वयं ाके धन्य करते है। इस प्रकार यह स्वतरू स्कूरत्कुण्डलमडिताननः वि0का0 6/16 में कानों चमकते है। कुण्डलों में सुशोभित मुखवाले सगवतंसविलासः म0का0 4/33 तथा सर्ग वि0का0 3/12 में बनमालाधारी आदि नाम रूपाधारित अलंकरण सम्बन्धी भगवन्नाम है।

(ख) गुणाधारित भगवन्नामः

गुणाधारित भगवन्नाम–गुणाधारित भगवन्नामों के तात्वक विवेचन के प्रस्तुत प्रकरण में गुणों की स्थिति का निर्वचन करना सुतराम अपेक्षित है। संसार मुें गुणों का अतीव महत्व होता है। रूप को यदि शरीर का कलापक्ष कहें तो गुण शरीर के भावपक्ष में गृहीत होंगे। रूप को देखकर दृष्ट के मन में स्थायी एवं अमिट प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति रूपवान नहीं है किन्तु गुणाढ्य है तो विज्ञ जनों द्वारा समाज में वह अर्चित एवं बंदित होता है तथा रूपवान होते हुए भी यदि कोई गुणहीन होता है तो वह समाज में सुशोभित नहीं होता जैसा कि संस्कृत जगत के प्रसिद्ध इस श्लोक–

''रूप यौवन सम्पनः विशाल कुल संभवाः।
विद्याहीन न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।''

इससे सिद्ध है कि एतदतिरिक्त यह भी कहा गया है कि गुण, गुणज्ञ के पास जाकर गुण ही बने रहते हैं तथा वही गुण गुणहीन व्यक्ति के पास दोष बन जाते है यथा च निम्नलिखित

''गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति तेतिगुण प्राप्त भवन्ति दोषः।
आस्वाद्यतोया प्रवहन्ति नद्यः समुद्रमासद्य भवन्त्यपेया।।

श्लोक से प्रमाणित है कि तर्क संग्रह पृष्ठ 8 में रूप रस गंध स्पर्श आदि 24 गुणों का उल्लेख हुआ है जबकि व्यास जी ने भागवत में (1/16/26 से 29 तक) सत्य, शौच, दया, क्षमा

उपसंहार–

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस शोध प्रबन्ध को 7 अध्याय में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय उपादद्यापरक है। द्वितीय अध्याय में आनन्दरामाण में भगवन्नामों का वर्गीकरण किया गया है। इसमें तत्वात्मक एवं तथ्यात्मक भगवन्नामों का निरूपण हुआ है। तृतीय अध्याय में आनन्द रामायण के भगवन्नों का दार्शनिक विश्लेषण हुआ है। इसमें सांख्य योग न्या वैशेषक, मीमांसा और वेदांत की दृष्टि से

भगवन्नामों का विश्लेषण हुआ है। इसमें लीला गुण वस्तु अलंकार और वर्ण रूपात्मक प्रतीकों का निरूपण हुआ है। पंचम अध्याय में आनन्द रामायण के लीलाधारित भगवन्नामों का तात्वक विश्लेषण हुआ है। इसमें प्रत्यक्ष लीलाधारित परोक्ष लीलाधारित लीला सांकेतिक और धाम परक भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण हुआ है। षष्ट अध्याय में आनन्द रामायण के रूप गुणाधारित भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण हुआ है। इसमें रूप घटित और गुणाधारित भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण हुआ है। सप्तम अध्याय में आनन्द रामाण की महिमा और लोक कल्याण पर प्रकाश डाला गया है। इसमें भगवन्नामों की महिमा प्रसि0 भगवन्नामों की उपादेयता पर प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ

सा 1/3/3
सा.का. 2/10 म.का. 9/16 से 169
सा.का. 3/24 म.का. 9/17 5/25
म.का. 4/24 6/22 7/28 9/31
या.का. 6/26 म.का. 6/31

डॉ. पुष्पा देवी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, सरस्वती महाविद्यालय, इटावा, उ.प्र.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org